पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज ।

"हरितवस्त्रेण शोभिता पृथ्वी सस्यशालिनी" इसका मतलब है की हमारी धरती माँ हरेरंग के कपड़ो के साथ पेड़-पौधो से भरी हुई सुंदर लग रही है। लेकिन हमने अब यह दृश्य खोदिया है क्यू की अब हमारी धरती कोंक्रीट जंगल बन चुकी है। हमारी माँ का सौंदर्य हमने ही छीन लिया है। कचरा फेंक कर, औद्योदिक प्रदूषण से और कई सारे तरीको से हमने इस धरती को मलिन किया है। आज हमारी परिस्थिति कुछ ऐसी है "हम पेड़ की डाली पर बैठकर उसी डाली को कॉट रहे है। जिससे हमें ही नुकसान है" तो चलिए जानते है "पारिस्थितिक स्वच्छता और समाज पर उसके प्रभाव के बारे में मुख्य कर भारत में हमारे केरल राज्य में ।

"पर्यावरण" या मेरी भाषा में "हमारी धरती माँ" हमारे जीवन का आधार है वो... हम उसी के गोद में पल रहे हैं और उसी को दूषित कर रहें हैं। जहाँ प्राचीन भारत के लोग प्रकृति की पूजा करते थे पेड़-पौधों को बहुत प्राधान्य देते थे। "नास्तिमूलम् अनौषधम्" यानि की ऐसा कोई भी सस्य नहीं है जिससे औषधीय गुण ना हो।

"दशकूप समो वापि दशवापि समो ह्रदः
दशह्रदसमो पुत्रो दशपुत्र समो द्रुमः॥"

इसका मतलब है की एक पेड़ दस मनुष्यों के समान है। लेकिन हम मनुष्य हमेशा खुदगर्ज बनते हैं. किसीके बारे में सोचते नहीं हैं। वेदों में कहाँ गया है की "परोपकारार्थं इदं शरीरं" लेकिन हम परोंके का उपकार नहीं अपकार करने में प्रथम स्थान में है।

मैं एक छोटी कहानी के साथ आज के हमारे धरती के गंभीर परिस्थिति के बारे मे बताना चाहती हूँ।

रोहन और रामू दोनों दिल्ली में रहते हैं लेकिन एक व्यत्यास यह है की रोहन शहर में रहता है और रामू छोटी सी गली में लेकिन दोनों पारिस्थितिक समस्यावों का सामना कर रहे हैं। जहाँ रोहन दिल्ली शहर में वायु प्रदूषण का समना कर रहा है और आशा करता है की वो कब शुद्ध वायु में साँस लेगा। इधर रामू कचरे के पहाड के पासवाले गली में रहता है जहाँ एक घर हमारे एक हाथ जितने छोटे हैं और 1000-2000 घरो के लिए सिर्फ 16 शौचालय है। कचरे से आनेवाली बॉस और गन्दे पानी के बीच अपना जीवन कर रहा है और आशा करता है की कब वो शुद्ध पर्यावरण के साथ शान्ति से अपने घर में जीयेगा।

इस कहानी से आप समझ सकते हो की "आप अमीर हो या गरीब दोनों पारिस्थितिक समस्याओं का समना कर रहे हैं"।
तो हमें अभी क्या करना चाहिए इससे ऊपर उठने के लिए?
यहाँ आता है हमारा विषय "पारिस्थितिक स्वच्छता"।
अगर हम स्वच्छता को बनाए रखते है तो हम पर्यावरण समस्याओं से दूर रह सकते है।
तो चलिए जानते हैं एक-एक कर-कर समस्याओं और इसके सामाधानों के बारे में।

भारत की राजधानी दिल्ली

दिल्ली में आप देख सकते हो एक मौंट एवरेस्ट - जो कचरा से बना है। और उसके आस-पास बहुत सारे परिवार रहते है लग-हगा 1000 - 6000 तक।

वे सभी सामना कर रहे हैं बहुत सारी समस्याओं का और इंतज़ार कर रहे हैं सरकार का की कब सरकार इस कचरे को वहाँ से हटाएगी। लेकिन उनलोगों के मन में यह डर भी है की अगर वो कचरा हटाया जायेगा तो उन्हें भी वहाँ से फेंक दिया जायेगा।

तो इस परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए।

- हमारी सरकार को यह एक सड़क बनानी होगी और शौचालय बनाने होंगे क्यूकी इससे यह लोग चैन से साँस ले सकेंगे।
- और जल्द से जल्द सरकार को कचरे को यहाँ से हटाना होगा क्यूकी यह यहाँ के लोगो को बिमारीयों से दूर कर सकता है। यह सिर्फ दिल्ली की नहीं सभी बड़े-बड़े शहरे की कहानी है। तो अगर हम हमारी देश की राजधानी को ही शुद्ध नहीं रख सकते तो क्या छवी बनेगी भारत की इस दुनिया में.....

तो हमें "स्वच्छता को हमारा ध्येय बनाना होगा"

स्वच्छता - विद्यालयो में

हम देख सकते है की हमारे देश के कई जगहो के विद्यालयों में की अगर शौचालय है तो दरवाज़ नहीं .. और दरवाज़ा है तो स्वच्छता नहीं है। .. इसके कारण बहुत सारे बच्चे बिमार पड़ रहे है। और राक प्रदेश में तो कचरे के बिन में आँग लगने के कारण स्कूल के बहुत सारे बच्चे घायल हुए।

समाधान :- कुछ हद तक हम बच्चो को ही शिक्षित कर सकते है "उनके पर्यावरण को स्वच्छा रखने के लिए"

:- दुसरा विकल्प है की हम सप्ताह के राक दिन विद्यालय में स्वच्छता दिवस मना सकते है जहाँ सभी बच्चे और अध्यापक मिलके स्वच्छता करते है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य /आरोग्य

सुचिकांको के अनुसार बड़े शहरो में रहनेवाले लोगो की जीवितावधी 12 सालसे घट चुकी है। लोगो मे कैंसर उसमें भी लंग कैंसर और त्वचा कैंसर बड़ रहे हैं तो इस परिस्थिति में स्वच्छता एक आवश्यकता नही मजबूरी बन चुकी है।

स्वच्छता के विषय में भारत

अभी के समय पर भारत के अन्धर ऐसी बहुत सारी एन् जि ओ है जहाँ सप्ताह के एक या दो दिन वे जाकार बहुत सी नदी और इतर जगहो को स्वच्छ करते है। और कुछ युवा इसी कचरे से बहुत सारी चीजे जैसे की बोतले, बॉग और कुछ लोग तो प्लास्टिक की बोतलो के कचरा भरकर उसे इटों के बदले में उपयोग करते हैं।

एक और अनोखी बात है की जो लोग सुबह वाकिंग पर जाते है वे उसके साथ-साथ

कचरा बिनने का काम करते हैं।

स्वच्छता न होने पर अर्थव्यवस्था पर असर

स्वच्छता होगी तो स्वास्थ्य अच्छा होगा लेकिन अगर लोग बिमार पड़ने लगे तो देश पर असर पड़ेगा। रोज़गार करने का वक्त कम होगा उत्पादन कम होगा.. आयात - निर्यात में भी कमी ... और देश को विकासशील ही बनाए रखेंगा..।

अगर हमें देश को विकासशील बनाना है तो हमें स्वच्छता को बनाए रखना होगा।

स्वच्छता और बच्चे / छात्र।

हम छात्र ही कल की प्रजा है तो हम कुछ छोटे-मोटे कदम लेने होंगे अपने देश के लिए।

- अगर विद्यालय पास में है तो हम पैदल / या साईकिल में जा सकते है।

• कुछ खाने के बाद हमें प्लास्टिक को फेंकना नहीं है।
• विद्यालय में स्वच्छता बनाई रखनी है।

यह एक क्षेत्रीय नहीं वैश्विक समस्या है। दुनिया के कई सारे देशों में स्वच्छता का पालन ना करने पर पैसे भरने होते हैं। लेकिन हमारे देश में नियम नहीं है। नियम है भी तो सक्त नहीं है। भारत के सरकार ने बहुत सारे नीतियां बनाई है। भारत में स्वच्छता बनाई रहने के लिए जैसे की :-

• स्वच्छभारत (2014)
• क्लीन गंगा

और भी बहुत सारी योजनाएं। लेकिन स्वच्छ भारत के आने के इतने साल बाद भी भारत में पूरी तरह से स्वच्छता नहीं है। लेकिन मैं गर्व करती हूँ की मेरे केरलमें स्वच्छता को

प्राधान्य दिया जाता है। यहाँ हरित कर्म चारी हर-घर में जाकर कूड़ा कचरा इक्कट्ठा करते है। सिर्फ 50 रुपिया देने पर। तो यह एक अच्छी बात है।

और आँगे केरल में "सॉलिड वेस्ट मेनेजमेंट" के लिए ज्यादा प्रधान्य दिया जाएगा।

पारिस्थितिक स्वच्छता समाज का अविभाज्य अंग है। यह बहुत तरह से समाज को प्रभावित करता है। अब मुझे एक किस्सा याद आया। जहाँ कैरला का एक व्यक्ति कचरे के नाले में फसकर अपना जान गवा देता है। तो ऐसी परिस्थिति आगे न आए, क्युकी यह हमारे राज्य की छवी बिगड़ देती है। तो हमे ऐसे नालों को जल्द से जल्द साफ करना है। अगर हम सब एक साथ मिलकर कोशिश करेंगे तो हम एक शुद्ध पर्यावरण का निर्माण कर

सकते है।

"स्वच्छता के साथ, देश का विकास
हो आसान"

तो हम यह ध्येय लेंगे की हम स्वच्छ भारत, और हरित केरल के निर्माण मे पूर्ण योगदान देंगे।